WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

# मंत्र रहस्य

(साधकों, योगियों, साधुओं एवं गृहस्थ व्यक्तियों के लिए अत्यन्त लाभकारी रहस्य जिसके माध्यम से वे अपने जीवन को ऊर्ध्वमुखी बनाकर जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकेंगे)

लेखक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

सम्पादक
कैलाशचन्द्र

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स
F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
☎ 23240026, 23240027 • फैक्स: 011-23240028
E-mail: info@vspublishers.com • Website: www.vspublishers.com

शाखा : हैदराबाद
5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)
बैंक स्ट्रीट, कोटी हैदराबाद-500 095
☎ 040-24737290
E-mail: vspublishershyd@gmail.com

वितरक :

- पुस्तक महल®, दिल्ली
  J-3/16, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
  ☎ 23276539, 23272783, 23272784 • फैक्स: 011-23260518
  E-mail: info@pustakmahal.com • Website: www.pustakmahal.com
  बंगलुरू: ☎ 080-22234025 • टेलीफैक्स: 080-22240209
  पटना: ☎ 0612-3294193 • टेलीफैक्स: 0612-2302719

- पी.एम. पब्लिकेशंस
  - 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
    ☎ 23268292, 23268293, 23279900 • फैक्स: 011-23280567
    E-mail: pmpublications@gmail.com
  - 6686, खारी बावली, दिल्ली-110006
    ☎ 23944314, 23911979

- यूनीकार्न बुक्स
  मुम्बई :
  23-25, ज़ाओबा वाडी (वी०आई०पी शोरूम के सामने), ठाकुरद्वार, मुम्बई-400002
  ☎ 022-22010941 • फैक्स: 022-22053387

© कॉपीराइट : वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-814480-2-1

संस्करण: 2012

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अन्तर्गत इस पुस्तक के तथा इसमें समाहित सारी सामग्री (रेखा व छायाचित्रों सहित) के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। इसलिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, टाइटल डिजाइन, अंदर का मैटर व चित्र आदि आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़ कर एवं किसी भी भाषा में छापने व प्रकाशित करने का साहस न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर वे हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार होंगे।

मुद्रक: पुष्प प्रिंट,

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

# दो शब्द

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्य जत्राः।
स्थरै रङ्गै स्तुष्टुवां सस्तनू भिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥

यह समस्त ब्रह्मांड मन्त्र-आबद्ध है। जीवन की प्रत्येक हलचल मन्त्र-संचालित है। प्राणिमात्र का छोटे से छोटा कार्य मन्त्र-संबद्ध है, अतः जीवन में मन्त्रों के बिना प्राणि-अस्तित्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

जब ब्रह्मांड का अणु-अणु मन्त्रबद्ध है, तो जीवन को भली भांति समझने के लिए मन्त्र के मूल रहस्य को समझना भी मानव का पुनीत और प्रथम कर्त्तव्य है, और इसी कर्त्तव्य-पूर्ति में यह ग्रन्थ पहला और अमिट चरण-चिह्न है।

इस पुस्तक की योजना बहुत पहले बन गई थी, परन्तु अन्य कई कार्यों में व्यस्त रहने के कारण जितना ध्यान और समय इस ग्रन्थ के लेखन में दिया जाना चाहिए था, देना संभव नहीं रहा, फलस्वरूप ग्रन्थ की पूर्णता में विलम्ब होता गया।

यह ग्रन्थ मन्त्र शास्त्र का सांगोपांग अध्ययन देने में समर्थ है। इसमें सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों ही पक्षों का सम्यक् संयोजन करने का प्रयास किया गया है, जिससे साधक को एक ही स्थान पन पूरी और प्रामाणिक जानकारी मिल सके।

मुझे विश्वास है साधकों, योगियों, साधुओं एवं गृहस्थ व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त अनुकूल, सहायक एवं पथ प्रदर्शक बनेगी। इसके माध्यम से वे अपने जीवन को ऊर्ध्वमुखी बनाकर जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकेंगें।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥

–डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

# सम्पादकीय

भारत वर्ष ही नहीं अपितु विश्व के साधकों को मंत्र साधना में मार्गदर्शन हेतु एक ऐसे ग्रंथ की आवश्यकता थी, जो उन्हें सम्यक् एवं समुचित ज्ञान दे सके, सैद्धान्तिक पद्धति का मर्म बता सके और उनकी समस्याओं के निराकरण हेतु पथ प्रदर्शन कर सके। मंत्र-शास्त्र के क्षेत्र में पूज्य सद्गुरुदेव डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी (स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी) से बढ़कर कौन व्यक्तित्व हो सकता है? मैंने उनसे निवेदन किया कि जब भी आपको समय मिले, आप मुझे व्याख्यान दें, जिससे मैं उसे लिपिबद्ध कर सकूं।

इस बीच अनेक साधुओं, संन्यासियों, गृहस्थ शिष्यों तथा साधकों द्वारा यह मांग बराबर बनी रही। मेरा निवेदन स्वीकार कर सद्गुरुदेव ने नित्य थोड़ा-थोड़ा समय देना आरंभ किया, जिससे इस ग्रंथ को साकार रूप दिया जा सका। वह चाहते थे कि यह केवल साधकों के लिए ही उपयोगी न हो, अपितु सामान्य गृहस्थ भी इससे लाभ उठा सकें। उनकी यह इच्छा भी थी कि साधना के क्षेत्र में पहुंचे हुए योगियों के लिए जिस प्रकार यह ग्रंथ लाभदायक हो, उसी प्रकार इस क्षेत्र में पहली बार प्रवेश करने वालों के लिए भी उतना ही उपयोगी हो।

ग्रंथ में पहली बार मंत्र के स्वरूप और विनियोग को स्पष्ट किया गया है। अंत में मंत्र और उनकी विधि देकर इसकी उपयोगिता और भी बढ़ा दी गई है।

यह बात सही है कि बिना समर्थ गुरु के मंत्र-शास्त्र का ज्ञान सम्भव नहीं है, क्योंकि मंत्र मूल रूप से ध्वन्यात्मक हैं और ध्वनि का ज्ञान गुरु मुख से ही सम्भव है, फिर भी यह ग्रंथ नए साधकों को रास्ता अवश्य दिखा सकता है और मंत्र शास्त्र से परिचित करा सकता है। यदि उनमें लगन होगी, तो निश्चय ही वे इसमें आगे बढ़कर गुरु की तलाश करेंगे और सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

साधक सीधे मंत्रों का प्रयोग या अनुष्ठान प्रारम्भ न करें। एक मंत्र और उससे सम्बन्धित अनुष्ठान को पूर्ण करने के लिए अधिक विधि विधान की आवश्यकता होती है तथा उसका ध्वन्यात्मक ज्ञान गुरु के द्वारा ही सम्भव है। अतः उन्हें चाहिए कि गुरु के चरणों में बैठकर सम्यक् ज्ञान प्राप्त करें और अपने अनुकूल साधना या मंत्र का चयन कर उसमें सफलता प्राप्त करें। मुझे विश्वास है कि यह ग्रंथ प्रत्येक व्यक्ति के लिए वरदान सिद्ध होगा और इसके माध्यम से वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर सकेगा।

—कैलाशचन्द्र श्रीमाली

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

# पूज्य सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी

मनुष्य जीवन और ब्रह्माण्ड ज्ञात-अज्ञात रहस्यों से भरा हुआ है। ज्ञात रहस्यों को विस्तार से समझना और उनके मूल की खोज करना मनुष्य की प्रकृति है। वहीं अज्ञात रहस्यों के सम्बन्ध में अनन्त जिज्ञासाओं के कारण कई ऐसे रहस्य उजागर हुए हैं, जिनके बारे में केवल कल्पना की जाती थी। सभ्यता के विकास के साथ यह क्रम निरन्तर चलता जा रहा है। आज मानव सभ्यता बड़े गर्व के साथ कह रही है कि हमने आदि युग से इक्कीसवीं शताब्दी तक ही यात्रा की है। पहिए के आविष्कार से कम्प्यूटर तक की यात्रा अवश्य ही महान् कही जा सकती है। इस पूरी यात्रा में बाह्य उपकरणों की ओर अधिक ध्यान दिया गया तथा अपनी सुख-सुविधा के लिए नए-नए उपकरण मनुष्य जुटाता रहा। इसी कड़ी में पत्थर के शस्त्रों से परमाणु शस्त्रों तक की यात्रा भी सम्पन्न की।

आज इस उन्नति का सुप्रभाव और दुष्प्रभाव दोनों देखने को मिल रहे हैं। जहां तक तकनीकी क्रान्ति से सम्पूर्ण विश्व को 'ग्लोबल विलेज' बना दिया है, वहीं असुरक्षा, भय, असन्तोष, निराशा, अविश्वास, अनिद्रा, व्यभिचार, युद्ध आदि में भी वृद्धि हुई है। क्या सभ्यता की यह उन्नति वास्तव में उन्नति कही जा सकती है? इस विषय पर हमारे ऋषियों ने भी विचार किया और उन्होंने जो मूल सिद्धान्त प्रतिपादित किया, वह था-

*सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।*
*सर्वेभद्राणि पश्यंतु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥*

यह सिद्धान्त कहां खो गया, सुख के इतने अधिक उपकरण हो जाने के बाद भी मनुष्य संतप्त, त्रस्त और दुःखी क्यों है? उसके जीवन में सुख और सन्तोष क्यों नहीं है, क्यों नहीं मनुष्य अपने जीवन में तृप्ति का अनुभव कर रहा है? विज्ञान हमारी वैदिक संस्कृति में मूल रूप से विद्यमान रहा है, इसीलिए चरक जैसे महान् चिकित्सक, सुश्रुत जैसे शल्य चिकित्सक, आर्यभट्ट और भास्कराचार्य जैसे खगोलशास्त्री भी हुए हैं, जिन्होंने वैज्ञानिक सिद्धान्तों की स्थापना की। इन्हीं के साथ महान् ज्ञानी ऋषि भी हुए हैं, जैसे शंकराचार्य, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ, अत्रि, कणाद, वेद व्यास, जिन्होंने जीवन के सिद्धान्तों की व्याख्या की। उनके ज्ञान का मूल आधार यह था कि किस प्रकार मनुष्य अपने जीवन में जन्म से मृत्यु तक की यात्रा स्वस्थ शरीर और चित्त के साथ कर सके। इसके लिए मंत्रों की रचना हुई। तंत्र विज्ञान अर्थात् क्रिया विज्ञान का विकास किया गया और उसके लिए आवश्यक उपकरण यंत्र का निर्माण हुआ। ब्रह्माण्डीय शक्ति, जिसे देव शक्ति माना गया, उसके और मनुष्य के बीच तारतम्य बैठ सके, उसी हेतु यह साधना विज्ञान विकसित किया गया। ऋषियों का

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

निश्चित सिद्धान्त था कि ब्रह्माण्डीय शक्ति अनंत है और इस अनन्त ऊर्जा से मनुष्य निरन्तर शक्ति प्राप्त कर सकता है। उस शक्ति को अपनी शक्ति के साथ संयोजन कर, योग कर वह जीवन के दुःखों का निराकरण कर सकता है। देवी-देवता, सम्मोहन, आकर्षण, साधना, विज्ञान, मंत्र, अनुष्ठान, यज्ञ, मुद्राएं इसी सिद्धान्त का प्रकट स्वरूप हैं। ऋषियों की परम्परा में इस साधना ज्ञान का विकास इस शताब्दी में नवीन रूप में अद्वितीय सिद्ध पुरुष द्वारा किया गया है।

सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली, जिनका संन्यस्त नाम परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी है, ने इस ज्ञान को जन-जन की भाषा में विस्तृत रूप से प्रदान करने हेतु अपने जीवन में संकल्प लिया। इसकी पूर्ति के लिए पूज्यश्री ने पूरे भारत वर्ष का भ्रमण किया, उन अज्ञात रहस्यों की खोज की, जिनके कारण मानव जीवन परिष्कृत और मधुर बन सकता है। उन्होंने संसार में रहकर सांसारिक जीवन को भी पूर्णता के साथ जिया, क्योंकि उनका यह सिद्धान्त था कि गृहस्थ जीवन की समस्याओं के पूर्ण ज्ञान हेतु गृहस्थ बनना आवश्यक है। अनुभव प्राप्त कर ही शुद्ध ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। उनके द्वारा रचित सैकड़ों ग्रंथों में मनुष्य के जीवन में त्रास को मिटाकर संतोष और तृप्ति प्रदान करने की भावना निहित है। इसी क्रम में उन्होंने मंत्र-शास्त्र, तंत्र-शास्त्र, सम्मोहन-विज्ञान, ज्योतिष, हस्तरेखा, आयुर्वेद आदि को वैज्ञानिक एवं तार्किक रूप से स्पष्ट किया।

अपने जीवन की 65 वर्षों की यात्रा में मानव जीवन के लिए उन्होंने ज्ञान का अमूल्य भण्डार खोल दिया, क्योंकि उनका कहना था कि ज्ञान ही शाश्वत है। इसी क्रम में उन्होंने सन् 1981 में 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' मासिक पत्रिका प्रारम्भ की, जिसके माध्यम से सारे रहस्यों को स्पष्ट किया। आज लाखों घरों में पहुंच रही इस ज्ञान प्रदीपिका ने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की धरोहर स्थापित कर दी है। यह पत्रिका ज्ञान का वह भण्डार है, जो मानव जीवन के प्रत्येक पहलू से सम्बन्धित सभी समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने के साथ-साथ जीवन को ऊर्ध्वमुखी गति प्रदान करने की दशा में क्रियाशील बनाने का सार्थक प्रयास है।

अपना कार्य पूर्ण कर देने के पश्चात् 3 जुलाई-1998 को सांसारिक काया का त्याग कर वे परमात्मा के साथ अवश्य समाहित हो गए, परन्तु आशीर्वाद स्वरूप उनके द्वारा स्थापित 'अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार' और 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' मासिक पत्रिका पूर्ण रूप से गतिशील है। उनके द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान ही इसका आधार है और ज्ञान की इस अजस्र गंगा में लाखों शिष्य सम्मिलित हैं।

—नन्दकिशोर श्रीमाली

—मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जाधपुर-342001 (राजस्थान)
फोन: 0291-432209, 011-7182248

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

## अनुक्रम

स्वस्तिवाचन 17-18

प्रवेश 19-82

मन्त्र 83-99

वर्ण 84, वर्ण प्रभाव 86, वर्ण ध्यान 88, वर्णों के देवता, रूप एवं शक्ति 89, वर्णों के ऋषि एवं छन्द 91, वर्ण वर्ग, नक्षत्र 92, वर्गीकरण 93, मन्त्र 94, ध्वनि 95, मन्त्रों की आत्मा 96, मन्त्र स्वरूप 97, मन्त्र सामर्थ्य 98

अन्तश्चेतना 100

आसन 101-106

स्वस्तिकासन 101, समासन 102, सिद्धासन 102, पद्मासन 104

आधार 107-118

मूलाधार चक्र 108, स्वाधिष्ठान चक्र 108, मणिपूर चक्र 109, सूर्य चक्र 110, चन्द्रचक्र 112, अनाहत चक्र 113, विशुद्ध चक्र 113, आज्ञा चक्र 114, सहस्रार चक्र 115

अष्टांग योग 119-122

यम 119, नियम 120, आसन 121

मुद्रा 123-138

नित्य पूजा मुद्राएं 123, सन्ध्या मुद्राएं 124, अंगन्यास मुद्राएं 126, कर-न्यास मुद्राएं 127, जीवन्यास मुद्राएं 128, देवोपासना की मुद्राएं 129, भोजन मुद्रा 129, पंचदेव मुद्राएं 129, शक्ति मुद्राएं 130, महाकाली मुद्राएं 130, महालक्ष्मी मुद्राएं 130, तारा मुद्राएं 130. त्रिपुरा मुद्राएं 130, भुवनेश्वरी मुद्राएं 130, शक्ति चालिनी मुद्रा131, योनि मुद्रा 131, खेचरी मुद्रा 131

बंध : मूलबंध, जालंधर बंध, उड्डियान बंध 131, महाबंध 132

प्राणायाम : रेचक 132, पूरक, 132, कुंभक 132, प्रत्याहार 132, धारणा 133, ध्यान 133, अष्ट सिद्धियां 133, समाधि 134, अन्त-श्चेतना जागरण 134, साधना 135

मन्त्र-अंग : भक्ति 136, शुद्धि 137, आसन 137, पंचांग सेवन 137,

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

आचार 137, तर्पण 137, धारणा 137, दिव्यदेश साधन 137 प्राण-
क्रिया 137, मुद्रा 137, तर्पण 137, हवन 137, बलि 137, योग 137,
जप 137, ध्यान 138, समाधि 138

**साधना** **139-148**

साधना क्या है 139, साधना के केन्द्र 139, साधना के अंग 140, साधकों
के कृत्य 140, निद्रा त्याग 140, स्नान 140, स्नान दोष निवारण
141, यज्ञोपवीत धारण विनियोग 141, यज्ञोपवीत धारण मन्त्र 142,
जीर्ण यज्ञोपवीत त्याग मन्त्र 142, आसन 142, आसन पूजा 142, कार्या-
नुसार आसन 143, दिशा विचार 144, तिलक किन-किन अंगों पर 146,
चन्दन लगाने का मन्त्र 146, भस्म लगाने का मन्त्र 145, तिलक करने
का सामान्य मन्त्र 146, सन्ध्या कब करे 146 सन्ध्या स्थान 147

**पूजा** **149-158**

अठारह उपचार 149, षोडशोपचार 149, दसोपचार 149, पंचोपचार
149, सामान्य पूजा-विधि 149, पंचगव्य प्रमाण 150, माला-संस्कार
150, करमाला 150, शक्ति अनुष्ठान 151, लक्ष्मी अनुष्ठान 151, वर्ण
माला 151, मणि माला 152, माला-चयन 154, पुष्प 154, त्याज्य
पुष्प 154, सावधानियां 155, जप 156, मुद्रा 157, विशिष्ट मुद्राएं
158, प्रधान मुद्राएं 158

**मन्त्र-सिद्धि** **159-163**

चार पीठिकाएं 159, दीक्षा : क्रियावती 160, वर्णमयी 160, कलावती
160, वेधमयी 161, पंचायतनी 161, क्रमदीक्षा 161, भूत-शुद्धि 162

**मन्त्र अनुष्ठान** **164-179**

मन्त्र की महिमा 164, मन्त्रों के अधिष्ठाता देवता 164, मन्त्र संज्ञा 165,
मन्त्र प्रयोग 165
मन्त्र भेद : पल्लव 166, योजन 166, रोध 166, पर 166, सम्पुट 166,
विदर्भ 166
मन्त्रों में ध्वनि-प्रयोग 166, षट्कार्यों में आसन प्रयोग 167, तन्त्र कार्यों
में आसन प्रयोग 167, मन्त्र अनुष्ठान 167, अन्य तथ्य 168, मानस-जप
170, मन्त्र-सिद्धि 170, नियम 171, मन्त्र साधन गोपनीयता 171,
साधना ज्योतिष परिप्रेक्ष्य में 171, साधना प्रारम्भ में शुभ समय-ज्ञान 173,
सिद्धियां : अणिमा 175, महिमा 175, लघिमा 175, प्राप्ति 175,
प्राकाम्य 176, ईशिता 176, वशिता 176, ख्याति 176
गौण सिद्धियां : अनूर्मि 176, दूर श्रवण सिद्धि 176, दूर दर्शन सिद्धि
176, मनोजव सिद्धि 176, काम रूप सिद्धि 176, परकाय प्रवेश 176,

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

स्वच्छन्द मरण 176, देवक्रीडानुदर्शन 176, यथासंकल्प संसिद्धि 176,
अप्रतिहत गति 176
क्षुद्र सिद्धियां : त्रिकालज्ञता 177, अद्वन्द्वता 177, परचिताज्ञभिज्ञता 177,
प्रतिष्टम्भ 177, अपराजय 177
शक्तिपात 177, स्पर्श दीक्षा 179, दृग्दीक्षा 179, ध्यान दीक्षा 179
मन्त्र-संस्कार 180-213
दस महाविद्याएं 180, कुलाकुल चक्र 181, राशिचक्र 181, नक्षत्रचक्र
182, अकडम चक्र 184, अकथह चक्र 185, ऋणी-धनी चक्र 186,
मास 187, पक्ष 188, तिथि 188, वार 188, नक्षत्र 188, योग 188,
करण 188, लग्न 189, मन्त्र स्थान 189, आसन 189, मन्त्र भेद 190,
पुरुष-स्त्री मन्त्र 190, मन्त्र के दोष 191
मन्त्रों के संस्कार : जनन 192, दीपन 192, वोधन 193, ताडन 193,
अभिषेक 193, विमलीकरण 193, जीवन 193, तर्पण 193, गोपन
193, आप्यायन 193
मन्त्र दोष : अभक्ति 193, अक्षर-भ्रांति 194, लुप्त 194, छिन्न 194,
ह्रस्व 194, दीर्घ 194, कथन 194, स्वप्न-कथन 194, कूर्म-चक्र 194
मन्त्र-जप-अंग : मन्त्र 196, मन्त्रशिखा 196, मन्त्रचैतन्य 196, मन्त्रार्थ
197, मन्त्र-भावना 200, गुरु-ध्यान 200, इष्ट ध्यान 202, कुल्लुका
202, महासेतु 203, कवचसेतु 203, निर्वाण 204 बन्धन 204, योनि
मुद्रा 204, करन्यास 204, अंगन्यास 204, प्राणायाम 204, मुखशुद्धि
204, प्राण-योग 205, दीपन 205, सूतकद्वय मोक्षण 205, मध्य दृष्टि
206, अनुलोम-विलोम वर्ण मातृका 206 पुरश्चरण 206, भोजन 206,
भोजन में निषिद्ध वस्तुएं 206
पुरश्चरण नियम-पालन : भूमि शैया 206, ब्रह्मचर्य 206 मौन 207, गुरु-
सेवा 207, स्नान 207, पूजा 207, दान 207, कीलन-उत्कीलन 207
मन्त्र-सिद्धि के उपाय : भ्रामण 211, रोधन 211, वश्य 211, पीडन
211, पोषण 211, शोषण 211, दाहन 212, शांति पाठ 212, शांति
स्तोत्र 212
विशिष्ट ज्ञातव्य तथ्य 214-231
योनिमुद्राबन्ध 214, प्रणव किसे कहते हैं 214, प्रणव कहां लगाना
चाहिए 214, प्रणव कहां नहीं लगाना चाहिए 214, ॐकार कहां लगाना
चाहिए 214, किस कर्म में क्या लगावें 215, मानसिक जप 215, पूजा
कब करे 216, जप काल में निषेध 216, जप काल में पवित्री धारण
216, जप संख्या साधन 216, स्तोत्र पाठ 217, देव-स्पर्श 217,
घर में मूर्ति 217, पुष्प 218, दीप पूजा 218, षट्कर्म 218, षट्कर्म

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

देवता एवं दिशा 218, षकट्र्म काल 219, षट्कर्म दैनिक ऋतु 219,
षट्कर्म तिथि, वार नक्षत्र, लग्नादि 219, मन्त्रों के अधिष्ठाता देवता 220,
पल्लव मन्त्र 220, योजन मन्त्र 220 रोध मन्त्र 220, पर मन्त्र 220,
सम्पुट मन्त्र 220, विदर्भ मन्त्र 220 हूं फट् प्रयोग 220, स्त्री, पुरुष.
नपुंसक मन्त्र 221, पट् कर्म आसन 221, षट् मुद्रा 221, पट् देव
ध्यान 221, पट् कर्म कुंभ 221, माला-निर्णय 221, माला-विचार
222, जपांगुली-विचार 222, जप दिशा 222, जप विचार 223, षट्
कर्म होमकुंड 223, षट्कर्म हवन सामग्री 223, अग्निजिह्वा 223,
अग्नि नाम 224, स्रुकस्रुव 224, मन्त्र प्रारम्भ लग्न 224, मन्त्र जप के
लिए ब्राह्मण कैसे हों 224, त्याज्य ब्राह्मण 225, जप करते समय मुंह
किधर हो 225, निषिद्ध आसन 225, आसन 225, माला 226, माला-
संस्कार 226, माला वस्त्र से आच्छादित 226, जप नियम 226, पंचामृत
227, गंध अंगुली विचार 227, अष्ट गंध 227. वर्ज्य पदार्थ 227, धूप
दीप-स्नान 227, नैवेद्य 227, साष्टांग नमस्कार 227, नवधा भक्ति 228,
प्रदक्षिणा विचार 228, यज्ञकाष्ठ विचार 228, अग्नि 228, कर्म विशेष
में अग्निनाम 228, अग्नि सप्त जिह्वा नाम 229, होम में वर्ज्य समिधाएं
229, अग्नि स्वरूप 229, अग्नि सम्मुख 229, शाकल्य प्रमाण 229, पूर्णा-
हुति विचार 229, वह्नि चैतन्य मन्त्र 229, मन्त्र पल्लव 230, मन्त्र कीलन
230, मन्त्र-उत्कीलन 230, मन्त्र-सिद्धि-साधन 230, मन्त्र जप समय में
छींक दोष परिहार 230, मन्त्र सिद्ध लक्षण 230, पोडशोपचार 231,
पंचोपचार 231, सर्वमान्य गुरु ध्यान 231, षष्ठाक्षर गणेश मन्त्र 231,
गणेश विनियोग 231, गणेश ध्यान 231, गायत्री स्वरूप 231, गायत्री
विनियोग 231, शिखा कहां-कहां बांधनी चाहिए 231

**गणपति** 232-235

सिद्ध लक्ष्मी गणपति 232, मंगल के लिए 234, समस्त प्रकार की रक्षा
के लिए 234, लक्ष्मी-प्राप्ति हेतु 235

**बीजयुक्त श्रीसूक्त** 236-269

विधि 238, विनियोग 238, ऋष्यादिन्यास 239, करन्यास 239, अंग-
न्यास 240, ध्यान 240, श्रीसूक्त पाठ 241, लक्ष्मीसूक्त 242, पाठफल
242, मन्त्र 243, षोडशोपचार पूजन 24 , क्षमा-याचना 243 बीजोक्त
श्रीसूक्त 244, सोलह श्लोकों के विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, षडंग-
न्यास, ध्यान, मन्त्र 244-269

**बीजयुक्त लक्ष्मी सूक्त** 270-272

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM


**दारिद्रय विनाशक धनदा प्रयोग** 273-279

दारिद्रय नाश : ऋष्यादिन्यास 275, करन्यास 275, षडंगन्यास 275, ध्यान 276, मन्त्र 276

सिद्ध लक्ष्मी : करन्यास 276, हृदयादिन्यास 276, ध्यान 277

धनदा : विनियोग 278, ऋष्यादिन्यास 278, करन्यास 278, षडंगन्यास 278, ध्यान 279, मन्त्र 279

**सिद्ध सम्पुट मन्त्र** 280-374

पूर्ण मन्त्र 281

काली मन्त्र : भूतशुद्धि 281, काली ध्यान, 281, काली यन्त्र 281, काली मन्त्रोद्धार 281, मन्त्र 282

तारा मन्त्र : तारा ध्यान 282, तारा यन्त्रोद्धार 283, तारा मन्त्रोद्धार 283, मन्त्र 283

षोडशी मन्त्र : षोडशी ध्यान 284, षोडशी यंत्रोद्धार 284, षोडशी मन्त्रोद्धार 284, मन्त्र 285

भुवनेश्वरी मन्त्र : भुवनेश्वरी ध्यान 285, भुवनेश्वरी यंत्रोद्धार 286, भुवनेश्वरी मन्त्रोद्धार 286, मन्त्र 286, मन्त्रफल 286

छिन्नमस्ता मन्त्र : छिन्नमस्ता ध्यान 286, छिन्नमस्ता यंत्रोद्धार 287, छिन्नमस्ता मंत्रोद्धार 287, मंत्र 287, मन्त्रफल 288

त्रिपुरभैरवी मन्त्र : त्रिपुरभैरवी ध्यान 289, त्रिपुरभैरवी यंत्रोद्धार 289, त्रिपुरभैरवी मन्त्रोद्धार 289, मन्त्र 289, मन्त्रफल 289

धूमावती मन्त्र : धूमावती ध्यान 289, धूमावती यंत्रोद्धार 289, धूमावती मन्त्रोद्धार 289, मन्त्र 289, मन्त्रफल 290

वगलामुखी मन्त्र : वगलामुखी ध्यान 291, वगलामुखी यंत्रोद्धार 292, वगलामुखी मन्त्रोद्धार 292, मन्त्र 292, मन्त्रफल 292

मातंगी मन्त्र : मातंगी ध्यान 292, मातंगी यंत्रोद्धार 291, मातंगी मंत्रोद्धार 293, मन्त्र 293, मन्त्रफल 293

कमला मन्त्र : कमलात्मिका ध्यान 295, कमलात्मिका यंत्रोद्धार 295, कमलात्मिका मन्त्रोद्धार 295, मन्त्र 295, मन्त्रफल 295

दुर्गा मन्त्र : दुर्गा ध्यान 295, दुर्गा यंत्रोद्धार 295, दुर्गा मन्त्रोद्धार 296, मन्त्र 296, मन्त्रफल 296

शिव मन्त्र : शिव ध्यान 297, शिवयंत्रोद्धार 297, शिवमन्त्रोंद्धार, 297, मन्त्र 298, मन्त्रफल 298,

गणेश मन्त्र : गणेश ध्यान 299, गणेश यंत्रोद्धार 299, गणेश मन्त्रोद्धार 299, मन्त्र 299, मन्त्रफल 299


WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

सूर्य मन्त्र : सूर्य ध्यान 299, सूर्य यंत्रोद्धार 299, सूर्य मन्त्रोद्धार 300, मन्त्र 300, मन्त्रफल 300
विष्णु मन्त्र : विष्णु ध्यान 301, विष्णु यंत्रोद्धार 301 विष्णु मन्त्रोद्धार 301, मन्त्र 301, मन्त्रफल 301
षडक्षर वक्रतुण्ड मन्त्र : विनियोग 302, ध्यान 302, वक्रतुण्डगणेश यन्त्र 302, मन्त्र 302, मन्त्रफल 302
एकत्रिंशदक्षर वक्रतुण्ड मंत्र : विनियोग 302, ध्यान 302, मन्त्र 302, मन्त्रफल 303
उच्छिष्ट गणपति नवार्ण मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 303
शक्ति विनायक मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र 303, मन्त्रफल 304
लक्ष्मी विनायक मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 304
त्रैलोक्यमोहन कर गणेश मन्त्र : विनियोग, ध्यान 304, मन्त्र, मन्त्रफल 305
ऋणहर्ता गणेश मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 305
हरिद्रा गणेश मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 306
सिद्धि विनायक मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 306
शिव पंचाक्षरी मन्त्र : विनियोग, ध्यान 307, मन्त्र, मन्त्रफल 308
अष्टाक्षरी शिव मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 308
त्र्यक्षर मृत्युञ्जय मन्त्र : विनियोग 308, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 309
त्र्यम्बक मन्त्र : विनियोग 309, ध्यान 309, मन्त्र 309 मन्त्रफल 309
महामृत्युञ्जय मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 310
रुद्र मन्त्र : विनियोग 311, ध्यान 311, मन्त्र 311, मन्त्रफल 311
त्वरित रुद्र मत्र : विनियोग 311, ध्यान 311, मन्त्र 311, मन्त्रफल 312
विष्णु मन्त्र : विनियोग 312, ध्यान 312, मन्त्र 312, मन्त्रफल 312
द्वादशाक्षर विष्णु मन्त्र : विनियोग 312, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 313
राम मन्त्र : विनियोग 313, ध्यान 313, मन्त्र 313, मन्त्रफल 313
दशाक्षर राम मन्त्र : विनियोग, ध्यान 313, मन्त्र, मन्त्रफल 314
कृष्ण मन्त्र : विनियोग 314, ध्यान 314, मन्त्र 314, मन्त्रफल 314
लक्ष्मीनारायण मन्त्र : विनियोग 314, ध्यान 314, मन्त्र, मन्त्रफल 315
नृसिंह मन्त्र : विनियोग 315, ध्यान 315, मन्त्र 315, मन्त्रफल 315
वाराह मन्त्र : विनियोग 315, ध्यान 316, मन्त्र 316, मन्त्रफल 316
सूर्य मन्त्र : विनियोग 316, ध्यान 316, मन्त्र 316, मन्त्रफल 316
हनुमान मन्त्र : विनियोग 317, ध्यान 317, मन्त्र 317, मन्त्रफल 317
हनुमान अष्टादशाक्षर मन्त्र : विनियोग, ध्यान 317, मन्त्र, मन्त्रफल 318
द्वादशाक्षर हनुमान मन्त्र : ध्यान 318, मन्त्र 318, मन्त्रफल 318
द्वादशाक्षर वीर साधन मन्त्र : ध्यान 319, मन्त्र 319, मन्त्रफल 319
चतुर्दशाक्षर हनुमान मन्त्र : मन्त्र 319, मन्त्रफल 319

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

आपत्ति उद्धारक बटुक मन्त्र : मन्त्र 320, मन्त्रफल 320
स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र : विनियोग 320, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 321
क्षेत्रपाल मन्त्र : विनियोग 321, ध्यान 321, मन्त्र 322, मन्त्रफल 322
कामदेव बीज मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 322
वरुण मन्त्र : विनियोग 322, ध्यान 323, मन्त्र 323, मन्त्रफल 323
कुबेर मन्त्र : विनियोग 323, ध्यान 323, मन्त्र 323, मन्त्र फल 323
षोडशाक्षर कुबेर मन्त्र : मन्त्र 323
चन्द्र मन्त्र : विनियोग 324, ध्यान 324, मन्त्र 324, मन्त्रफल 324
मंगल मन्त्र : विनियोग 324, ध्यान 324, मन्त्र 324, मन्त्रफल 324
गुरु मन्त्र : विनियोग 325, ध्यान 325, मन्त्र 325, मन्त्रफल 325
शुक्र मन्त्र : विनियोग 325, ध्यान 325, मन्त्र 325, मन्त्रफल 325
धर्मराज मन्त्र : मन्त्र 326, मन्त्रफल 326
चित्रगुप्त मन्त्र : मन्त्र 326
घंटाकर्ण मन्त्र : मन्त्र 326, मन्त्रफल 326
कार्तवीर्यार्जुन मन्त्र : विनियोग, ध्यान 326, मन्त्र, मन्त्रफल 327
हरिवाहन गरुड़ मन्त्र : विनियोग 327, ध्यान 327, मन्त्र, मत्रफल 327
चरणायुध मन्त्र : विनियोग 327, ध्यान 328, मन्त्र 328, मन्त्रफल 328
सन्तान गोपाल मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 328
पुत्र-प्राप्ति मन्त्र : मन्त्र 328, मन्त्रफल 329
विविध गायत्री मन्त्र : हंस गायत्री मन्त्र 329, ब्रह्म गायत्री मन्त्र 329,
सरस्वती गायत्री मन्त्र 329, विष्णु गायत्री मन्त्र 329, त्रैलोक्य मोहन
गायत्री मन्त्र 329, लक्ष्मी गायत्री मन्त्र 329, नारायण गायत्री मन्त्र 329,
राम गायत्री मन्त्र 329, जानकी गायत्री मन्त्र 329, लक्ष्मण गायत्री मन्त्र
330, हनुमान गायत्री मन्त्र 330, गरुड़ गायत्री मन्त्र 330, कृष्ण गायत्री
मन्त्र 330, गोपाल गायत्री मन्त्र 330, राधिका गायत्री मन्त्र 330,
परशुराम गायत्री मन्त्र 330, नृसिंह गायत्री मन्त्र 330, शिव गायत्री मन्त्र
330, रुद्र गायत्री मन्त्र 330, गौरी गायत्री मन्त्र 331, गणेश गायत्री मन्त्र
331, षणमुख गायत्री मन्त्र 331, नन्दी गायत्री मन्त्र 331, सूर्य गायत्री
मन्त्र 431, चन्द्र गायत्री मन्त्र 331, भौम गायत्री मन्त्र 331, पृथ्वी गायत्री
मन्त्र 331, अग्नि गायत्री मन्त्र 331, जल गायत्री मन्त्र 331, आकाश
गायत्री मन्त्र 332, वायु गायत्री मन्त्र 332, इन्द्र गायत्री मन्त्र 332, काम
गायत्री मन्त्र 332, गुरु गायत्री मन्त्र 332, तुलसी गायत्री मन्त्र 332, देवी
गायत्री मन्त्र 332, शक्ति गायत्री मन्त्र 332, अन्नपूर्णा गायत्री मन्त्र 332,
काली गायत्री मन्त्र 332, तारा गायत्री मन्त्र 333, त्रिपुर सुन्दरी गायत्री
मन्त्र 333, भुवनेश्वरी गायत्री मन्त्र 333, भैरवी गायत्री मन्त्र 333,

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

छिन्नमस्ता गायत्री मन्त्र 333, धूमावती गायत्री मन्त्र 333, बगलामुखी गायत्री मन्त्र 333, मातंगी गायत्री मन्त्र 333, महिषमर्द्दिनी गायत्री मन्त्र 333, त्वरिता गायत्री मन्त्र 333

दुर्गाष्टाक्षर मन्त्र : विनियोग 334, ध्यान 334, मन्त्र 334, मन्त्रफल 334

नवार्ण मन्त्र : विनियोग 334, मन्त्र 334

नवार्ण भेद मन्त्र : मारण 335, मोहन 335, उच्चाटन 336, वशीकरण 336, स्तम्भंन 336, विद्वेषण 336, नवार्ण महामन्त्र 336

दुर्गस्मृता मन्त्र : विनियोग 337, मन्त्र 337, मन्त्रफल 337

दक्षिण कालो मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 338

भद्रकाली मन्त्र : मन्त्र 338, मन्त्रफल 338

श्मशान काली मन्त्र : मन्त्र 338, मन्त्रफल 338

पंचाक्षर मन्त्र : मन्त्र 338, मन्त्रफल 338

नील सरस्वती मन्त्र : विनियोग 338, मन्त्र 339, मंत्रफल 339

सरस्वती मन्त्र : विनियोग 339, ध्यान 339, मन्त्र 339, मन्त्रफल 339

वाग्देवी मन्त्र : मन्त्र 339

विद्या मन्त्र : मन्त्र 339, मन्त्रफल 339

एकाक्षरी सरस्वती मन्त्र : मन्त्र 340, मन्त्रफल 340

षोडशी मन्त्र : विनियोग 340, मन्त्र 340, मन्त्रफल 340

बाला त्रिपुरा मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 341

भुवनेश्वरी मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 341

त्र्यक्षरात्मक भुवनेश्वरी मन्त्र : मन्त्र 341

त्रिपुर भैरवी मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 342

छिन्नमस्ता मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र 342, मन्त्रफल 343

धूमावती मन्त्र : विनियोग 343, ध्यान 343, मन्त्र 343, मन्त्रफल 343

बगलामुखी मन्त्र : विनियोग 343, ध्यान 343, मन्त्र, मन्त्रफल 344

मातंगी मन्त्र : विनियोग 344, ध्यान 344, मन्त्र 344, मन्त्रफल 344

लक्ष्मी बीज मन्त्र : विनियोग 344, ध्यान 344, मन्त्र 345, मंत्रफल 345

चतुरक्षर लक्ष्मी बीज मन्त्र : ध्यान 345, मन्त्र 345

दशाक्षर लक्ष्मी मन्त्र : ध्यान 345, मन्त्र 345

महालक्ष्मी मन्त्र : विनियोग 345, ध्यान 346, मन्त्र 346

द्वादशाक्षर महालक्ष्मी मन्त्र : मन्त्र 346

सिद्ध लक्ष्मी मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 347

ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्रि : विनियोग 347, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 348

वसुधा लक्ष्मी मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 348

वार्ताली मन्त्र : विनियोग 349, ध्यान 349, मन्त्र 349, मन्त्रफल 349

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

महिषमर्दिनी मन्त्र : विनियोग, ध्यान 349, मन्त्र, मन्त्रफल 350
रेणुका शबरी मन्त्र : विनियोग, ध्यान, मन्त्र, मन्त्रफल 350
अन्नपूर्णा मन्त्र : विनियोग 350, ध्यान 350, मन्त्र 351, मन्त्रफल 351
पृथ्वी मन्त्र : विनियोग 351, मन्त्र 351, मन्त्रफल 351
मणिकर्णिका मन्त्र : विनियोग 351, मन्त्र 351, मन्त्रफल 352
शीतला मन्त्र : विनियोग 352, मन्त्र 352
ज्वालामुखी मन्त्र : मन्त्र 352, मन्त्रफल 352
स्वप्न सिद्धि मन्त्र : विनियोग 352, मन्त्र 352
स्वप्नेश्वरी मन्त्र : विनियोग 353, ध्यान 353, मन्त्र 353, मन्त्रफल 353
स्वप्न देवी मन्त्र : मन्त्र 353
स्वप्न चक्रेश्वरी मन्त्र : मन्त्र 353, मन्त्रफल 353
हनुमान मन्त्र : मन्त्र 354, मन्त्रफल 354
चन्द्र योगिनी मन्त्र : मन्त्र 354, मन्त्रफल 354
स्वप्न मातंगी मन्त्र : मन्त्र 354, मन्त्रफल 354
घंटाकर्णि मन्त्र : मन्त्र 354, मन्त्रफल 354
कर्ण पिशाचिनी मन्त्र : 355, मन्त्रफल, कर्ण पिशाचिनी अन्य मन्त्र 355
स्वप्न मुसलमानी मन्त्र : मन्त्र 355, मन्त्रफल 355
वागीश्वरी मन्त्र : मन्त्र 355, चित्रेश्वरी मन्त्र 356, कीर्तीश्वरी मन्त्र 356
अंतरिक्ष सरस्वती मन्त्र : मन्त्र, नीला मन्त्र, घट सरस्वती मन्त्र 356
यक्षिणी साधना मन्त्र : विचित्रा 356, विभ्रमा 356, हंसी 356, भिक्षिणी 356, जन-रंजिनी 357, विशाला 357, मदना 357, घंटा 357, कालकर्णी 357, महामाया 357, माहेन्द्री 357, शंखिनी 357, चंद्रिका 357, श्मशानी 357, वट 358, मेखला 358, लक्ष्मी 358, मानिनी 358, शतपतिया 358, सुलोचना 358, सुशोभना 358, कपालिनी 358, विलासिनी 358, नटी 358, कामेश्वरी 358, स्वर्णरेखा 359, सुर-सुन्दरी 359, मनोहरा 359, प्रमदा 359, अनुरागिणी 359, नखकेशिका 359, नेमिनि 359, पद्मिनी 359, स्वर्णावती 359, रतिप्रिया 359, कुबेर 359, विल्व 359, चंद्रद्रवा वट 359, धनदा 360, पुत्रदा 360, अशुभ क्षयकारी 360, विद्यादात्री 360, जयार्क 360, संतोषा 360, राज्यदा तुलसी 360, राज्यदा कोल 360, कुश 360 अपामार्ग 360, क्षीरार्णवा 360, चंद्रामृत 360, स्वामीश्वरी 361, महामायाभोग 361, त्यागा 361, उच्छिष्ट 360, सर्वाङ्ग सुलोचना 361, भूतलोचना 361, जलपाणि 361, मातंगेश्वरी 361, विद्या 361, कुमारी 361, बंदी 361
अष्ट अप्सरा आवाहन मन्त्र : शशि 361, तिलोत्तमा 361, कांचनमाला, कुंडला, रत्नमाला, रम्भा, उर्वशी, भूषणा 362

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

अष्ट किनारी मन्त्र : मंजुघोषा, मनोहारी, सुभगा, विशालनेत्री, सुरति प्रिया, अश्वमुखी 362, दिवाकीर 363
कात्यायनी मन्त्र : सुभग कात्यायनी 363, कुंडल कात्यायनी 363, चंद्र-कात्यायनी 363, रुद्र कात्यायनी 363, महाकात्यायनी 363, सुर कात्यायनी 363
कर्ण पिशाचिनी मन्त्र : ध्यान 363, मन्त्र 363, मन्त्रफल 364,
सिद्ध कर्ण पिशाचिनी मन्त्र : विनियोग 365, ध्यान 365, मन्त्र 365, मन्त्रफल 365
अन्य कर्ण पिशाचिनी मन्त्र : 365, 366
वार्ताली मन्त्र : मन्त्र 366, मन्त्रफल 366
विप्रचाण्डालिनी मन्त्र : मन्त्र 366, मन्त्रफल 366
क्षोभिणी मन्त्र : मन्त्र 367, मन्त्रफल 367
प्रेत साधन मन्त्र : मन्त्र 367, मन्त्रफल 367
चेटक मन्त्र : यक्षिणी चेटक 367, लिंग चेटक 367, नाना सिद्धि चेटक 367, सागर चेटक 368, काली चेटक 368, फेत्कारिणी चेटक 368, रतिराज चेटक 368, शतयोजन दृष्टि चेटक 368, तस्कर ग्रहण चेटक 369, चौर्य चेटक 369, गुप्त वार्ता लक्ष्य चेटक 369 स्वर्ण सिद्धि मन्त्र 369, अदृश्य विधान मन्त्र 369, प्रत्यंगिका मन्त्र 370, चोरी न हो मन्त्र 370, भूत उपद्रव नाश मन्त्र 370, नजर झाड़ने का मन्त्र 371, ज्वर दूर करने का मन्त्र 371, सुख प्रसव मन्त्र 371, विच्छू झाड़ने का मन्त्र 371, सर्प झाड़ने का मन्त्र 372, शत्रु पीड़ा कारक मन्त्र 372, शत्रु को पागल करने का मन्त्र 372, शत्रु गृह कलह कारक मन्त्र 372, विक्रय रोधन मन्त्र 372, शत्रु मारण मन्त्र 373, मुख स्तंभन मन्त्र 373, वशीकरण मन्त्र 373, विचित्र मन्त्र 373

उपसंहार 375-380

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

# स्वस्तिवाचन

ओम स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः
स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः । स्वस्ति पूषा
असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहे सोमं स्वस्ति
भुवनस्य यस्पतिः । बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये
स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ।
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो
वसुरग्निः स्वस्तये । देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये
स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ।
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि
स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ।
ऋग्वेद : ५.५१.११.१२.१३.१४.१५-

ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा
शान्तिरेधि ।

द्युलोक में जो सर्वत्र शान्ति है, जो शान्ति अन्तरिक्ष में है और जो शान्ति पृथ्वी पर है वही शान्ति जल, औषधि, व वनस्पतियों में भी है ।

समस्त देवताओं में और उनकी भावनाओं में शान्ति है, ब्रह्म लोक में सर्वत्र शान्ति है और समस्त ब्रह्माण्ड में जो शान्ति है वही शान्ति मुझे प्राप्त हो ।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि
देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो
भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।

हे ! ईश्वर, आप समस्त प्राणियों को अच्छे पथ पर चलाने वाले हैं तथा समस्त आनन्द को देने वाले हैं । आपकी कृपा से ही धार्मिक व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



उत्तम मार्ग से उत्तम प्रज्ञा को प्राप्त करते हैं। वही प्रज्ञा हम भी प्राप्त करना चाहते हैं अतः आप हमारे कुटिल पाप दूर करें, हम आपको प्रणामयुक्त वाणी कहकर श्रद्धा-युक्त अभिवादन करते हैं।

ओम् आब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यो ऽतिव्याधी
महारथो जायताम्
दोग्ध्री धेनुर्वोढ़ाऽनड्वानाशुः
सप्तिः पुरन्धिर्योषा
जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य
यजमानस्य वीरो जायताम्
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु
फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्
योगक्षेमो नः कल्पताम्।
यजुर्वेद अ० २२-२२

हे ब्रह्मन्! मेरे राष्ट्र में ब्राह्मण ब्रह्म तेज को धारण करने वाले हों, क्षत्रिय वीर, रोग रहित तथा धनुर्विद्या में निपुण हों, गायें अधिक दूध देने वाली हों तथा बैल भारी-से-भारी बोझ ढोने में समर्थ हों, घोड़े गतिमान हों, नारियां पतिव्रता हों, यजमान युवक सभ्य, विजयी तथा रथवाहन युक्त हों, बादल समय पर पूर्ण वर्षा करें, औषधियां फल धारण करने वाली हों तथा सभी प्रकार से हमारा योग क्षेम हो।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम् देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेम ह देवहितं यदायुः।
ऋग्वेद १-८९-८

हे देवो। हम नित्य अपने कानों से मंगलदायक वचन सुनते रहें, हे यज्ञों में चरु, पुरोडास आदि से सन्तुष्ट होने वाले देवो! हम अपने नेत्रों से अच्छा देखें, हम अपने अंगों से राष्ट्र हित में कार्य करें और प्रजापति हमें पूर्ण आयु प्रदान करें।

ओम् शतं जीव शरदो वर्द्धमानः शतं
हेमन्तान्छतमु वसन्तान्। शतमिन्द्राग्नी
सविता वृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः।
ऋग्वेद : १०.१६१-४

हे प्रभु! हम सौ वर्ष तक जीवित रहें, हमारी सन्तान बलिष्ठ होकर शतायु हो, हम अपने परिवार बन्धु-बांधव सहित दीर्घ आयु प्राप्त करें, हम शतायु होकर ईश्वर की आराधना में दत्तचित्त हों तथा राष्ट्र निर्माण में पूर्ण सहयोग दें।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

# प्रवेश

मंत्र की अपने आप में पूर्ण और स्वतंत्र सत्ता है । जीवन के पार्थिव अपार्थिव चेतन अचेतन, निष्क्रिय और सक्रिय जीवन में मंत्र की सर्वोपरि महत्ता है । बिना मंत्र के जीवन का अस्तित्व संभव ही नहीं । वेदों में मंत्र को सर्वोच्च सत्ता एवं उन्हें ब्रह्म के समान माना है । हमारे जीवन में जो कुछ भी घटित हो रहा है इसके मूल में मंत्र की सत्ता विद्यमान है । यह बात अलग है कि हम उनके अस्तित्व को स्वीकार करें या न करें अथवा मंत्र के महत्त्व को समझें या न समझें, परन्तु यह निश्चित है कि बिना मंत्र के हमारे जीवन का कोई अस्तित्व नहीं ।

मानव जो कुछ बोलता है वह अपने आप में शब्द है और जब शब्द का सम्बन्ध अर्थ से हो जाता है तो वह कल्याणमय बन जाता है । वे शब्द निरर्थक होते हैं जिनके मूल में अर्थ विद्यमान नहीं रहता । कालिदास ने 'वागर्थाविव' कह कर इसी कथन की पुष्टि की है, परन्तु जिसके मूल में अर्थ है वे शब्द ही सार्थक हैं । ऐसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि जब शब्द को ब्रह्म कह दिया जाता है तब फिर प्रत्येक शब्द ब्रह्ममय बन जाता है । हम लौकिक व्यक्ति जिन शब्दों के अर्थ समझ लेते हैं उन्हें सार्थक कहते हैं पर जिन शब्दों को हम नहीं समझ पाते वे वास्तव में ही इतने उच्च कोटि के होते हैं कि हमारी बुद्धि उन शब्दों के मूल तक नहीं पहुंच पाती और इसी लिए हम अपने अहं के वशीभूत होकर उन शब्दों को निष्क्रिय कह देते हैं ।

कई बार हम देखते हैं कि उच्च कोटि के साधक का ध्यान टूटने पर उनके मुंह से कई ऐसे शब्द निकल जाते हैं जिनका आपस में कुछ भी सम्बन्ध या तारतम्य नहीं होता, तब हम आश्चर्यचकित से उनके मुंह की ओर ताकते रहते हैं और फिर अपने मन को समझाकर शान्त कर लेते हैं कि स्वामी जी ने कुछ भी मुंह से कह दिया होगा ।

परन्तु ये 'कुछ भी' शब्द अपने आप में अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि उनका धरातल इतना ऊंचा होता है कि हम सामान्य मानव उस ऊंचाई तक पहुंच नहीं पाते या हमारी बुद्धि इतनी विकसित नहीं है कि हम उस ऊंचाई को समझ सकें ।

वास्तव में मानव के मुंह से जो भी शब्द निकलता है वह 'मंत्रमय' होता है । जिन शब्दो के अर्थ समझ में आते हैं उन्हें बातचीत की संज्ञा से विभूषित कर देते हैं पर जो शब्द यों ही मुंह से निकल जाते हैं या जिन शब्दों के अर्थ हमारी समझ में

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



नहीं आत उन शब्दों को हम व्यर्थ का मान लेते हैं, जबकि वास्तव में बात यह है कि जिन शब्दों के अर्थ समझ में आते हैं, वे लौकिक शब्द या सामान्य शब्द कहे जा सकते हैं, इसके विपरीत जिन शब्दों का अर्थ या तारतम्य सामान्य व्यक्ति के समझ में नहीं आता, वे शब्द वास्तव में ही अपना महत्त्व रखने वाले होते हैं ।

मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि प्रत्येक वह शब्द जिसके मूल और अर्थ का रहस्य हम नहीं समझ पाते, वे उच्च कोटि के होते हैं परन्तु इस प्रकार के निश्चित लय और शब्दों से बंधे हुए समूह को 'मंत्र' कहा जा सकता है ।

मानव जब दूसरे से बात करता है तो वह मंत्र ही है, क्योंकि एक निश्चित लय और सीमा से बंधे शब्दों के समूह का प्रभाव सामने वाले के मन पर अवश्य पड़ता है, क्योंकि वह उन शब्दों के मूल और उसके अर्थ को समझता है । उदाहरण के लिए एक भिखारी किसी सम्पन्न व्यक्ति के दरवाजे पर जाकर घर के स्वामी को यह कहता है कि 'मैं भूखा हूं' तो यह वाक्य मंत्रमय है क्योंकि इन शब्दो का अर्थ प्रभाव गृह स्वामी के चित्त पर पड़ता है ।

एक व्यक्ति जा रहा है और एक भिखारी उससे याचना करता है पर वह उसे टरका देता है, परन्तु कुछ दूर जाने पर दूसरा भिखारी विगलित कंठ से वही वाक्य दोहराता है, जो कि पहले भिखारी ने कहे थे तो वह व्यक्ति द्रवित होकर उस भिखारी को कुछ-न-कुछ दे देता है ।

यहां पर दोनों भिखारियों ने एक ही शब्दों का प्रयोग किया है, परन्तु पहले भिखारी ने सामान्य तरीके से अपनी बात कही थी, जबकि दूसरे भिखारी ने उन्हीं वाक्यों को एक विशेष लय के साथ उच्चरित किया, जिसका प्रभाव उस व्यक्ति पर गहराई के साथ पड़ सका ।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि मंत्र के प्रभाव में ध्वनि और लय का विशेष महत्त्व होता है, क्योंकि वह मंत्र निरर्थक होता है, जिसके मूल में निश्चित-लय या ध्वनि नहीं होती । इस प्रकार से वे शब्द निरर्थक कहे जा सकते हैं जिनके मूल में अर्थ भले ही हो परन्तु यदि वे शब्द एक विशेष लय के साथ नहीं कहे जायें तो उनका प्रभाव सर्वथा नगण्य होता है ।

एक कवि सम्मेलन में जब हास्य रस का कवि मंच पर खड़ा होकर एक विशेष लय के साथ अपनी हास्य कविता सुनाता है तो दूर-दूर तक बैठे श्रोता खिलखिला पड़ते हैं और हंसते-हंसते दोहरे हो जाते हैं, परन्तु इसके कुछ ही समय बाद या किसी अन्य अवसर पर इसी प्रकार के मच पर खडे हांकर उसी हास्य कवि की वही क़विता कोई अन्य पाठक पढ़ता है तो एक भी श्रोता नहीं हंस पाता ।

यहां पर स्थान वही है, शब्द वही है, परन्तु एक व्यक्ति उन शब्दों को एक विशेष लय के साथ पढ़ता है जिससे उन शब्दों का प्रभाव दूर बैठे श्रोताओं के चित्त पर पड़ता है, परन्तु यदि वे ही शब्द बिना लय के साथ पढ़े जायें तो उनका प्रभाव बिल्कुल नहीं होता ।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



इससे यह स्पष्ट है कि शब्द या उसके अर्थ मंत्र शास्त्र की दृष्टि से विशेष महत्त्व नहीं रखते, अपितु एक विशेष लय या ध्वनि महत्त्वपूर्ण प्रभाव रखती है। कवि ने जिन शब्दों का प्रयोग किया था वे शब्द एक दूसरे से जुड़े होने के कारण अर्थमय अवश्य थे, परन्तु उसके साथ कहने का एक विशेष ढंग या लय महत्त्वपूर्ण था जिसका प्रभाव श्रोताओं पर पड़ा और वे दूर बैठे हुए भी खिलखिलाने या हंसने लगे।

यदि मोटे रूप में कहा जाय तो यदि हास्य कविता का प्रभाव श्रोताओं के चित्त पर पड़ सकता है तो अन्य पंक्ति का भी प्रभाव पड़ सकता है, यदि उस पंक्ति को विशेष लय के साथ कहा जाय।

मंत्र का मूल यह 'लय' ही है, जो साधक एक निश्चित लय के साथ मंत्र का उच्चारण करता है वह निश्चय ही सफलता प्राप्त कर लेता है, परन्तु यदि सीधे-सादे रूप में उस मंत्र का पठन किया जाए तो उसका प्रभाव नहीं होगा, क्योंकि उस शब्द या वाक्य के साथ लय का संयोग नहीं है।

शब्दों की शक्ति अपने आप में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानी गई है क्योंकि विज्ञान के अनुसार हम जो भी उच्चारण करते हैं वह ध्वनि पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाती है और वह युगों-युगों तक अक्षुण्ण बनीं रहती है। उदाहरण के लिये रेडियो पर जो भी भाषण या संगीत सुनते हैं वह ध्वनि हजारों मील दूर से उच्चरित होती है, परन्तु हमारे पास रेडियो के रूप में ऐसा साधन विद्यमान है जिससे कि हम उस ध्वनि को पकड़ पाते हैं और तब हम उस व्यक्ति की आवाज सुनने में समर्थ हो जाते हैं जो कि हजारों मील दूर बैठा बोल रहा है।

अतः शब्द की सीमा अपार है, सामने बैठे व्यक्ति पर ही शब्द का प्रभाव पड़ता हो यही सब कुछ नहीं है अपितु हजारों मील दूर बैठे व्यक्ति के चित्त पर भी हम उन शब्दों के द्वारा एक निश्चित प्रभाव डालने में समर्थ हो सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि हास्य रस का कवि हजारों मील दूर बैठा विशेष लय के साथ कविता सुना रहा हो और हम रेडियो के द्वारा उस कविता को सुनें तब भी हम खिलखिला पड़ते हैं क्योंकि उस ध्वनि का प्रभाव हमारे चित्त पर पड़ रहा है। फलस्वरूप उस शब्द के द्वारा जो प्रभाव हम पर होना चाहिए वह होता है और इसीलिए हम हंसते हैं। इसी प्रकार करुण रस की कविता सुनकर सुबकने लग जाते हैं, वीर रस सुनकर रोमांच हो उठते हैं और वीभत्स रस के द्वारा हम घोर घृणा से भर जाते हैं।

किसी शब्द की मूल ध्वनि क्या है, जिससे कि उसका निश्चित और स्थायी प्रभाव पड़ सके यह पुस्तक नहीं बता सकती। इसके लिए गुरु की आवश्यकता होती है, क्योंकि वही उच्चारण करके उस शब्द की मूल ध्वनि को समझा सकता है और जब हमें शब्द की मूल ध्वनि का ज्ञान हो जाता है तो हम उसी लय के साथ उस शब्द का उच्चारण कर निश्चित प्रभाव डालने में समर्थ हो सकते है।

यहां पर 'गुरु' शब्द का प्रयोग विशेष अर्थ में नहीं कर रहा हूं। गुरु वह होता है जिसे उस क्षेत्र का विशेष ज्ञान हो। अतः जो मंत्र की व्याख्या, उसका उप-

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



योग, उसकी क्रिया, उसका अर्थ और उसकी ध्वनि समझा सके वही गुरु कहा जा सकता है।

कई बार लोगों के मुंह से ऐसा सुनने में आता है कि कलयुग में मंत्र निरर्थक हो गए हैं, क्योंकि उनका प्रभाव नहीं होता या जिस प्रकार से ग्रन्थ में लिखा हुआ है उसी प्रकार से क्रिया करने पर भी उसका जो प्रभाव होना चाहिए वह नहीं हो पाता।

इससे लोगों की आस्था मंत्र से हटने लगती है और वे इसी तथ्य पर पहुंचते हैं कि मंत्र अपने आप में व्यर्थ हैं या मंत्रों का प्रभाव नहीं हो पाता, परन्तु कारण कुछ और है, जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि मंत्र या शब्द अथवा उसका अर्थ अपने आप में बहुत अधिक महत्त्व नहीं रखता, अपितु उसकी ध्वनि विशेष महत्त्व रखती है, और मंत्र में जो चेतना मानी गई है, वह 'ध्वनि' ही है। यह ध्वनि पुस्तक के निर्जीव पृष्ठ नहीं बता सकते। इसके लिए गुरु की उपस्थिति अनिवार्य है क्योंकि वही मंत्र और उसकी मूल ध्वनि उच्चारण करके समझा सकता है।

अतः तब तक मंत्र और मंत्र-जप निरर्थक है जब तक कि उसकी ध्वनि का ज्ञान हमें नहीं हो जाता। यही नहीं अपितु आवश्यकता इस बात की है कि ठीक उसी रूप में ध्वनि-उच्चारण होना चाहिए जो कि उस शब्द का मूल जीवन्त है। केवल मात्र उसी प्रकार से उच्चारण कर देना ही सब कुछ नहीं होता।

मंत्र की सत्ता अपने आप में सर्वोपरि है और इसका प्रभाव निश्चित और स्थायी होता है परन्तु दुख इस बात का है कि धीरे-धीरे हमारी वर्तमान पीढ़ी मंत्र के महत्त्व को अस्वीकार करने लगी है, उसकी उपयोगिता से हम दूर हटने लगे हैं, हममें इतना धैर्य नहीं रह गया है कि हम सही गुरु की खोज कर सकें और उनके द्वारा मंत्र की मूल ध्वनि को प्राप्त कर सकें।

हमारा भारतवर्ष इस क्षेत्र में सर्वोपरि था, क्योंकि यहां के साधक और महर्षि अपने आप में मंत्रमय थे, उनका पूरा जीवन मंत्र और उनके रहस्य को समझने-समझाने में बीत जाता था। वे शिष्यों को अपने साथ रखकर उन्हें पुत्रवत स्नेह देते थे और उन्हें मंत्र की मूल ध्वनि का ज्ञान कराते थे। यह परम्परा मौलिक रूप से बराबर आगे बढ़ती गयी, परन्तु मुगलकाल में इस पद्धति का ह्रास हुआ और उस समय फारसी कलमा तथा इसी प्रकार के मंत्रों का प्रचलन बढ़ा, फलस्वरूप मूल मंत्र और उसके रहस्य को समझने वाले महर्षि कम होते गए। इसके बाद जो रहा सहा वैभव था वह अंग्रेजों ने पूरी तरह से समाप्त कर दिया। यह विद्या ब्राह्मणों के पास पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही थी, परन्तु जब ब्राह्मणों के पुत्रों ने अंग्रेजों की गुलामी और नौकरी करनी शुरू कर दी तो वे उसी रंग में रंग कर चोटी और यज्ञोपवीत से हाथ धो बैठे और मंत्र आदि विद्याओं को दकियानूसी कहने लगे।

कुछ समय बाद बहुत ही कम साधक ऐसे रह गए, जिन्हें मंत्रों का और उनकी ध्वनि का पूर्ण ज्ञान था। वे यह चाहते थे कि यह मौलिक परम्परा आगे भी जीवित

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



रहे, परन्तु उनके पास सर्वथा अयोग्य शिष्यों की ही भरमार बनी रही जो कि चमत्कार में तो विश्वास करते थे परन्तु परिश्रम करने से जी चुराते थे। जो एक ही दिन में मंत्र मर्मज्ञ होना चाहते थे उनकी ध्वनि या उनके स्वरूप को समझने का परिश्रम करना नहीं चाहते थे। ऐसी स्थिति में गुरु किंकर्तव्यविमूढ़ बन गया कि इन शिष्यों को किस प्रकार से ज्ञान दिया जाय, क्योंकि गुरु ज्ञान तो देना चाहता था, पर योग्य शिष्यों का ही अभाव हो गया था और वे उस विद्या को प्राप्त करने में सर्वथा अयोग्य और असमर्थ दिखाई देने लगे।

वर्तमान पीढ़ी ने मंत्र को रटे रटाये तरीके से बोलने में ही पूर्णता समझ ली। आज भी ब्राह्मण के पुत्र को पन्द्रह, बीस, पचास मंत्र अवश्य कंठस्थ होंगे परन्तु उसकी लय का उसे कतई ज्ञान नहीं होगा। पुस्तकों के माध्यम से जो कुछ देखा, आजीविका वृत्ति बनाने के लिए उन मंत्रों को रट लिया और इस प्रकार से अपनी जीविकोपार्जन में सहायता प्राप्त कर ली। उनका मूल उद्देश्य पेट भरना रह गया। मंत्र के मूलस्वरूप को समझने में उनकी रुचि नहीं रही। इस प्रकार धीरे-धीरे इस विषय में जानकार कम होते गए, जिन महर्षियों को या साधकों को इनका ज्ञान था वह ज्ञान उनके साथ ही समाप्त हो गया। वे शिष्य की झोली में बहुत कुछ डालने के लिए लालायित थे परन्तु शिष्य की झोली ही जब फटी हुई थी तो गुरु क्या कर पाता ? साथ-ही-साथ शिष्य में धैर्य और परिश्रम करने की भावना ही नहीं थी, तब गुरु अपने ज्ञान को दे ही कैसे पाता ? और इस प्रकार मंत्र को समझने वाले साधकों का अभाव होता गया।

कुछ साधक अपने आपको समाज से तब अलग कर बैठे जब उन्होंने देखा कि हमारी उपयोगिता नहीं के बरबार रह गई है, मंत्र या इनसे संबंधित व्यक्तियों को निम्न स्तर से देखा जाने लगा है, समाज की भावना केवल मात्र यही रह गई है कि येन केन प्रकारेण धन संचय किया जाय, इसके लिए चाहे कुछ भी करना पड़े। उनका सारा तंत्र या कार्य केवल इसी बिन्दु पर केन्द्रित हो गया कि किस प्रकार से ज्यादा-से-ज्यादा धन इकट्ठा किया जाय। ऐसी स्थिति में उन साधकों ने अपने आपको समाज से अलग कर दिया और पहाड़ में दूर एकान्त स्थान में अपनी साधना में रत हो गए; इस प्रकार उनका सम्पर्क समाज से टूट गया।

ऐसी स्थिति में पूरा समाज दिग्भ्रमित हो गया है। वह मंत्रों की महत्ता को स्वीकार करता है। वह चाहता है कि मंत्रों को समझा जाय और उसका उपयोग जीवन को सुखमय बनाने के लिए किया जाय। इसके लिए वह साधुओं, संन्यासियों के चारों ओर चक्कर लगाता है, और वे नकली साधु या लम्बी-लम्बी जटाएं बढ़ाकर आंखों में ललाई लाकर इन्हें सब्ज बाग दिखाते रहते हैं कि तुम्हें मैं सब कुछ दे सकता हूं जबकि हकीकत में उनके पास कुछ है ही नहीं। जब उनके पास कुछ है ही नहीं तो वह दूसरों को क्या दे पाएगा ? उनके ठोकर खाने पर जब कुछ भी प्राप्त नहीं हो पाता, तब सामान्य मानव परेशान हो जाता है, मंत्रों पर से उसका विश्वास डिगने लगा है तथा साधु और संन्यासियों पर उसकी अनास्था पैदा हो गई है।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



मंत्र शास्त्र की दृष्टि से पिछले पांच सौ वर्ष अंधकार के ही थे, जिसमें धीरे-धीरे इस विद्या का लोप होता गया। एक समय ऐसा भी आया जबकि सही गुरु प्राप्त होना हिमालय पर चढ़ाई करने के समान हो गया। आज नकली साधु गुरु और संन्यासी तो गली कूचों में मिल जायेंगे, परन्तु इस क्षेत्र में सही जानकारी रखने वाला गुरु दस लाख में एक या दो ही होंगे।

जब प्रतिशत इतना कमजोर है तो सामान्य मानव के बस की बात नहीं रह गई है। जब भी वह इस प्रकार के लेख पढ़ता है या किसी साधु के चमत्कार की कहानियां सुनता है तो वह उस तरफ भागता है, परन्तु बदले में उसे कुछ भी नहीं मिल पाता।

आजादी के बाद इस भयावह स्थिति पर भी विचार हुआ और यह आशंका बलवती हो गई कि यदि इसी प्रकार बना रहा तो एक समय ऐसा भी आ सकता है जबकि इस विद्या को जानने वाला एक भी व्यक्ति न रहे, अतः इस पर गहराई के साथ विचार किया गया और मैं यह देख रहा हूं कि पिछले दस वर्षों में एक नई चेतना पैदा हो रही है जो कि लोगों का विश्वास पुनः मंत्र पर स्थापित करने में सफल रही है। जिनका विश्वास पूरी तरह से डगमगा गया था, उन्हें संबल मिला है। सामान्य मानव को अब यह विश्वास होने लगा है कि यह विद्या पूरी तरह से लुप्त नहीं हो गई है, क्योंकि जिन लोगों ने इस विद्या को जीवन्त बनाए रखने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ किए हैं वे समर्थ हैं, उन्हें मंत्रों का गहराई के साथ ज्ञान है।

मंत्र को समझने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है, क्योंकि मंत्र अपने आपमें पूर्ण नहीं है अपितु उसके साथ जो क्रिया-पद्धति है वह मिल कर एक पूर्ण मंत्र का निर्माण करती है, जैसे आटा अपने आपमें पूर्ण रोटी नहीं है अपितु आटे के साथ जिस प्रकार से पूरी क्रिया करने पर रोटी का निर्माण होता है तभी उससे भूख शान्त हो सकती है, उसी प्रकार जब तक मंत्र और उसकी पद्धति का पूर्ण ज्ञान नहीं होता तब तक उससे पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता।

मुझे याद है कि कुछ वर्षों पूर्व केदारनाथ के पास एक साधु सम्मेलन हुआ था, जिसमें मुख्य रूप से उन साधुओं, साधकों एवं मंत्र अध्येताओं को निमंत्रण किया था जो इस क्षेत्र में पूर्ण जानकार थे। उसमें लगभग तीन सौ साधु महर्षि आदि इकट्ठे हुए थे, जो कि अपने आपमें वीतरागी थे, साधु थे, ऐसे व्यक्ति थे जो घर गृहस्थी से सर्वथा मुक्त थे और जिनका पूरा जीवन मंत्रों की शोध में ही व्यतीत हुआ था।

उस सम्मेलन में मैं भी उपस्थित था और मेरे गुरु भाई डा० श्रीमाली जी भी उपस्थित थे। मेरा उपस्थित होने का मूल कारण यह देखना था कि अब तक मंत्रों को जानने वाले कितने लोग शेष हैं और वे इस विद्या को आगे बढ़ाने के लिए कितने अधिक प्रयत्नशील हैं।

पर सम्मेलन में बात यह सामने आई कि धीरे-धीरे मंत्र और उसकी ध्वनि को सही रूप से समझने वाले लोग समाप्त हो रहे हैं और जिनके पास यह विद्या है

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



भी वे पूरी तरह से समाज से कटे हुए हैं। इस प्रकार हमारा समाज इस प्रकार की उच्च विद्या से वंचित रह रहा है और वह पागलों की तरह इधर-उधर भटक रहा है परन्तु उसे सच्चा साधु या सच्चा मंत्र मर्मज्ञ प्राप्त नहीं हो रहा है।

सम्मेलन की समाप्ति तक भी कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया। सबके मन में एक ही दुख था कि योग्य शिष्यों की प्राप्ति नहीं हो रही है, जिन्हें यह ज्ञान दिया जा सके, साथ-ही-साथ यदि कोई शिष्य प्राप्त होता भी है तो वह परिश्रम करने से घबराता है और इस प्रकार का एकाकी जीवन जीने का अभ्यस्त न होने के कारण थोड़े समय बाद ही भाग खड़ा होता है।

सम्मेलन में उन मंत्र मर्मज्ञों की मृत्यु पर भी दुख प्रगट किया गया जो पिछले दो वर्षों में मृत्यु को प्राप्त हो गए थे। इस प्रकार धीरे-धीरे मंत्रों की वास्तविक ध्वनि और उसकी क्रिया को समझने वाले लोगों की समाप्ति हो रही थी और नये व्यक्ति तैयार नहीं हो रहे थे जो कि इस प्रकार की चेतना को और भारत की इस दुर्लभ विद्या को जीवित रख सकें।

सम्मेलन का निर्णय लगभग यही था कि ऐसी स्थिति में कुछ भी नहीं किया जा सकता और जो कुछ हो रहा है, वह ठीक ही हो रहा है। यदि प्रभु को यही मंजूर है तो इसके आगे क्या किया जा सकता है?

यह स्थिति एक प्रकार से कायरता की स्थिति थी। इस स्थिति को डा० श्रीमाली सहन नहीं कर सके। उन्होंने खड़े होकर कहा, कि सम्मेलन जो भी निर्णय ले रहा है, वह सही हो सकता है, परन्तु यह निर्णय पूर्णतः कायरता का निर्णय है, नपुंसकता का निर्णय है, हकीकत में देखा जाय तो यह वास्तविकता से भागने का निर्णय है। यदि सम्मेलन का यही निर्णय रहा तो भारतवर्ष के लिए यह अत्यन्त भयावह स्थिति होगी और वह दिन दूर नहीं होगा जबकि इस पृथ्वी से मंत्र और उसकी ध्वनि हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगी।

आने वाली पीढ़ी हमें, और हमारे सम्मेलन को धिक्कारेगी कि कायरता के साथ सम्मेलन को समाप्त कर हमने अपने आपको मृत्यु के मुंह में डाल दिया। आने वाला समय हममें से किसी को भी क्षमा नहीं करेगा, आवश्यकता इस बात की है कि हम इस चुनौती को स्वीकार करें और एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करें जो कि इस प्रकार के ज्ञान से पूर्ण हो, जिनमें मंत्रों को सीखने, समझने और उनके प्रयोग में रुचि लेने की ललक हो और जो पूर्ण रूप से मंत्रों के प्रति समर्पित हों वे युवक आगे आवें या ऐसे युवकों की खोज की जाय जो कि इस प्रकार के कार्य के लिए पूर्णतः समर्थ हों।

भारतवर्ष की भूमि नपुंसक नहीं है। साठ करोड़ जनता में कम-से-कम सौ युवक ऐसे प्राप्त हो सकते हैं जिन्हें परिश्रम करने की और मंत्रों को जीवित बनाए रखने की रुचि हो और जो सारे सुखों को त्याग कर इस क्षेत्र में कुछ कर गुजरने का हौसला रखते हों।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



अपनी बात को समाप्त करते हुए डा० श्रीमाली ने कहा कि मुझे दुख इस बात का हो रहा है कि हम रचनात्मक भूमिका निभाने की अपेक्षा कायरता की भूमिका निभाने की कोशिश कर रहे हैं। यदि आप सभी इस बात के लिए कृतसंकल्प हों तो ऐसी कोई बात नहीं है, परन्तु आपने भगवे वस्त्र धारण करके इस बात का निश्चय कर लिया है कि अब आपका समाज से कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है, यह एक प्रकार से पलायन की भूमिका है, संघर्ष से छुटकारा पाने का प्रयत्न है, कठिनाइयों से मुक्ति पाने की चाह है, आपके ये निर्णय किसी भी प्रकार से योग्य नहीं हैं और इस सम्मेलन के उपयुक्त तो सर्वथा नहीं ही हैं।

मैं इस बात के लिए भी दृढ़ संकल्प हूं कि चाहे मुझे कितना ही त्याग करना पड़े या चाहे मैं अकेला ही रह जाऊं फिर भी मैं इसी प्रयत्न में बराबर लगा रहूंगा कि यह विद्या सर्वथा लोप न हो जाय और इस विद्या की पूर्णता में किसी प्रकार की न्यूनता न आवे।

यह छोटा-सा वक्तव्य अपने आपमें चुनौतीपूर्ण था और एक प्रकार से उस पूरे सम्मेलन पर थप्पड़ की तरह था जिसने एक बार पुनः सही ढंग से सोचने के लिए मजबूर कर दिया। सम्मेलन के अधिकांश मंत्र मर्मज्ञ डा० श्रीमाली से परिचित थे और उनके कार्यों से तथा उनकी साधनाओं से तभी से परिचित थे जब वे गृहस्थ जीवन में नहीं थे। वे इस बात को जानते थे कि आज विश्व में मंत्र के क्षेत्र में स्वामी सच्चिदानन्द जी से उच्चकोटि का व्यक्ति नहीं है, वे सही रूप में युग पुरुष हैं, और मंत्र साधना आदि के क्षेत्र में सर्वोपरि हैं। उनका ज्ञान हिमालय से भी महान है, मंत्र के क्षेत्र में और साधना के क्षेत्र में उनकी महत्ता निर्विवाद रूप से सभी स्वीकार करते हैं।

डा० श्रीमाली इस प्रकार की महान विभूति के प्रमुख शिष्य हैं यह बात सभी को ज्ञात थी और वे सभी इस बात को अनुभव करते थे कि वास्तव में उनका शिष्य होना ही अपने आप में पूर्णता है। इस प्रकार की चुनौती वही व्यक्तित्व दे सकता है, जिसमें आग हो या जिसमें इस विषय की पूर्णता हो।

सम्मेलन के लगभग सभी साधु और महर्षि प्रसन्न थे कि जिस व्यक्ति ने इस चुनौती को सबके सामने रक्खा है, वह अपने आप में एक सम्पूर्ण और समर्थ व्यक्तित्व है, मंत्र के क्षेत्र में आज भी उनकी राय को सबसे ऊंचा महत्त्व दिया जाता है। सम्मेलन के सभापति के रूप में उनका नाम निर्विवाद रूप से लिया गया था और एक मत से उन्हें सभापति पद पर बिठाने का निर्णय लिया था, परन्तु यह उनकी ही विनम्रता थी कि उन्होंने अस्वीकार करते हुए सामान्य मंत्र शास्त्री के रूप में ही भाग लेने का निश्चय किया था।

सभी ने एक प्रकार से हर्षध्वनि की और उनकी अभ्यर्थना करते हुए एक मत से प्रस्ताव पास किया कि आज के युग में परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द के प्रमुख शिष्य डा० श्रीमाली मंत्र के क्षेत्र में निर्विवाद रूप से सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व है और एक प्रकार से उन्हें मंत्र पुरुष कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



सम्मेलन को प्रसन्नता है कि उन्होंने इस गंभीरता को समझा है और इस विद्या को समाज से जोड़ने में रुचि ली है, सम्मेलन को विश्वास है कि यह विद्या भारतवर्ष से लोप नहीं हो सकेगी । और आने वाली पीढ़ियां डा० श्रीमाली की आभारी रहेंगी कि उनके प्रयत्नों से मंत्रों की मूल ध्वनि और उनकी क्रिया जीवित रह सकी है ।

इस प्रस्ताव के साथ ही सम्मेलन समाप्त हो गया ।

डा० श्रीमाली को मैं तव से जानता हूं जव वे यायावर जीवन में थे । वे गृहस्थ होते हुए भी पूर्णतः साधु थे और उन्होंने गृहस्थ के अनन्य पथ को इसीलिए छोड़ दिया था जिससे कि उन साधुओं और महर्षियों के सम्पर्क में आ कर उस ज्ञान को प्राप्त किया जा सके, जो कि वास्तव में उच्चकोटि का है और जिस ज्ञान की वजह से ही भारत पूरे विश्व में सम्मानित है ।

इस प्रकार के साधु जीवन के रूप में लगभग सत्रह वर्ष रहे और इन वर्षों में उन्होंने जो कुछ प्राप्त किया वह भारत और विश्व से छिपा हुआ नहीं है । इन वर्षों में वे उन सभी लोगों के सम्पर्क में आए जिनके पास इस प्रकार का थोड़ा बहुत भी ज्ञान था । वे कई साधुओं के पास रहे और उनसे उन सभी प्रकार की विद्याओं को सीखने का प्रयत्न किया जो कि वास्तव में ही दुर्लभ थी और यह उनका सौभाग्य था कि उन्हें इस प्रकार के साधु मिलते गए जो कि वास्तव में अपने क्षेत्र में उच्चकोटि के थे ।

सबसे वड़ी उपलब्धि परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी की शिष्यता प्राप्त करना है । जो साधना के क्षेत्र में हैं वे परमहंस के नाम से परिचित हैं और वे ही इस वात को अनुभव कर सकते हैं कि उन तक पहुंचना ही हिमालय को लांघने के वरावर है या जीवन में उनके दर्शन उच्चकोटि का पुण्य माना जाता है, तव उनसे शिष्यत्व प्राप्त कर लेना अपने आपमें उच्चकोटि का भाग्य है । विश्व में मात्र तीन ही शिष्य उनके माने जाते हैं जिनको उन्होंने विधिवत दीक्षा दी है ।

यह वात इसका प्रमाण है कि डा० श्रीमाली ने इस स्तर को प्राप्त करने के लिए कितना अधिक प्रयत्न किया होगा, कितना कष्ट उठाया होगा और इस स्तर को प्राप्त करने के लिए कितना कठोर संघर्ष किया होगा ? सुना है कि स्वामी सच्चिदानन्द जी हजार से भी ज्यादा आयु के हैं और वे किसी को शिष्य वनाते ही नहीं, क्योंकि उनकी शिष्य वनाने की परीक्षा इतनी कड़ी और कठोर है कि उस परीक्षा को पास करना सामान्य जीवन में सम्भव ही नहीं है, आज भी साधक मंत्र या साधना कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व मन-ही-मन स्वामी सच्चिदानन्द जी का स्मरण करते हैं जिससे कि वे अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होकर सहायक हो सकें ।

पिछले हजार वर्षों में केवल तीन शिष्य वनाना ही इस वात का प्रमाण है कि उनका चयन कितना कठिन है और किस प्रकार से वे उनकी परीक्षा लेते हैं । साधना के क्षेत्र में उनका शिष्य होना ही अपने आपमें पूर्णता माना जाता है, मेरे कथन की गंभीरता केवल वे व्यक्ति समझ सकते हैं जो कि साधना क्षेत्र में हैं या इस प्रकार की क्रिया से परिचित हैं ।

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM



डा० श्रीमाली का जीवन एक ही कार्य को पूर्णता देने के लिए नहीं बना है, कई बार मैं आश्चर्यचकित रह जाता हूं कि एक ही व्यक्तित्व इतने अधिक कार्यों का बोझ किस प्रकार से सम्भाल लेता है ? किसी एक विद्या में पूर्णता प्राप्त करने के लिए ही जब पूरा जीवन खप जाता है तो किस प्रकार से उन्होंने कई विद्याओं में पूर्णता प्राप्त की है । और उन सभी विद्याओं में वे उस स्तर पर हैं जो कि अपने आपमें अन्यतम है ।

ज्योतिष के क्षेत्र में उनकी महत्ता निर्विवाद रूप से स्वीकार की जाती है । इस क्षेत्र में उन्होंने उन सभी आयामों को पूर्णता दी है जो कि इस से संबंधित है । सामुद्रिक शास्त्र, अंक शास्त्र, मुखाकृति विज्ञान आदि क्षेत्र में उन्होंने ग्रन्थों की रचना की हैं, तथा ज्योतिष के गणित और फलित पक्ष में उनकी मान्यता पूरे भारतवर्ष में निर्विवाद रूप से स्वीकार की जाती है ।

इसके अलावा आयुर्वेद का उन्हें अन्यतम ज्ञान है, यद्यपि इस विद्या से अभी सामान्य जन परिचित नहीं है, परन्तु उन्होंने इस क्षेत्र में जो कुछ प्राप्त किया है वह अपने आप में अन्यतम है । तन्त्र के क्षेत्र में उनकी महत्ता को सभी स्वीकार करते हैं मंत्र के क्षेत्र में स्वामी सच्चिदानन्द जी का शिष्य होना ही इस बात का प्रमाण है कि वे इस क्षेत्र में सर्वोपरि हैं, और वह सम्मेलन इस बात को अनुभव कर रहा था कि पूरे सम्मेलन में उपस्थित साधुओं का ज्ञान भी उस अकेले व्यक्तित्व के ज्ञान से न्यून है, क्योंकि उन्हें सभी प्रकार के मंत्रों का पूर्ण ज्ञान हैं और उसकी मूल ध्वनि तथा क्रिया का विधिवत अभ्यास है ।

वे मूलतः सरल गृहस्थ हैं, और गृहस्थ जीवन को भी कुशलता के साथ संचालन कर रहे हैं । पूरे दिन जिस प्रकार से वे व्यस्त रहते हैं उसको अनुभव करके आज भी मैं सोचने के लिए बाध्य हो जाता हूं कि ऐसी कौन-सी जीवट शक्ति है, जो कि उन्हें इतना श्रम करने के लिए उत्साहित करती रहती है ।

डॉ० श्रीमाली से मेरा परिचय एक संयोग के रूप में ही हुआ था । यद्यपि आयु में मैं उनसे चार-पांच वर्ष बड़ा हूं परन्तु ज्ञान के क्षेत्र में उनकी महत्ता को निर्विवाद-रूप से स्वीकार करता हूं ।

मेरा उनका परिचय एक संयोग ही था और मैं सोचता हूं कि यह संयोग मेरे लिए अत्यन्त सुखदायक रहा है, उस समय भी मैं साधु जीवन में था और आज भी मैं साधु जीवन में ही हूं । बचपन से ही मैंने यह निश्चय कर लिया था कि मुझे विवाह नहीं करना है और अपना सारा जीवन योग्य गुरु की खोज में बिता देना है जिसके सान्निध्य में बैठकर मैं ज्ञान के उन आयामों को स्पर्श कर सकूं जो कि अपने आप में उच्चतर रहे हैं ।

मैं अपने जीवन में एक जगह बहुत कम टिका हूं, भटका ज्यादा हूं, और इस भटकते हुए जीवन में जो भी अनुभव हुए हैं वे अपने आप में अलग हैं । परन्तु मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि मैं अपने जीवन में जितना और जो कुछ प्राप्त करना

WWW.GRADESETTER.COM

WWW.GRADESETTER.COM

# मंत्र रहस्य

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आध्यात्मिक गुरु, ज्योतिषाचार्य एवं भविष्यवक्ता तथा तंत्र-मंत्र-यंत्र के प्रकाण्ड विद्वान डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली ने इस ग्रंथ में मंत्रों के तमाम रहस्यों का दिव्य दर्शन कराया है। उनके माहात्म्य, प्रभाव एवं उच्चारण विधियों को पूर्ण रूप में समझाया-सिखाया गया है। एक सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ द्वारा ये मंत्र शिक्षाएं ग्रहण करके आज कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

'मंत्र रहस्य' एक ऐसी प्रामाणिक एवं सचित्र पुस्तक है, जिसके असंख्य दुर्लभ मंत्रों के माध्यम से साधक एक सफल मंत्र शास्त्री बन सकता है। इसकी महिमा प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की पूर्णता एवं सम्बल प्रदान करने में सहायक है।

मंत्र धर्म-कर्म के अंतर्गत अद्भुद आस्था के प्रतीक हैं। वास्तव में ये धर्मप्राण करोड़ों लोगों के जीवन को निष्कंटक, निर्विघ्न एवं आपदारहित बनाने के पावन एवं दिव्य स्रोत हैं। इनके उच्चारण से मन की अपूर्व शुद्धि होती है। परमसत्त को छू लेने वाले ये अलौकिक मंत्र अपने भक्त के प्रति करुणा उपजा देते हैं और तब ईश्वर उसके सर्वकल्याण के लिए निश्चित रूप से वरदान देते हैं। इस प्रकार मंत्र मनुष्य के आनंद, मंगल एवं सुखद भविष्य के ठोस आधार हैं।


इन विषयों पर अन्य कृतियां

अंग्रेजी में भी उपलब्ध

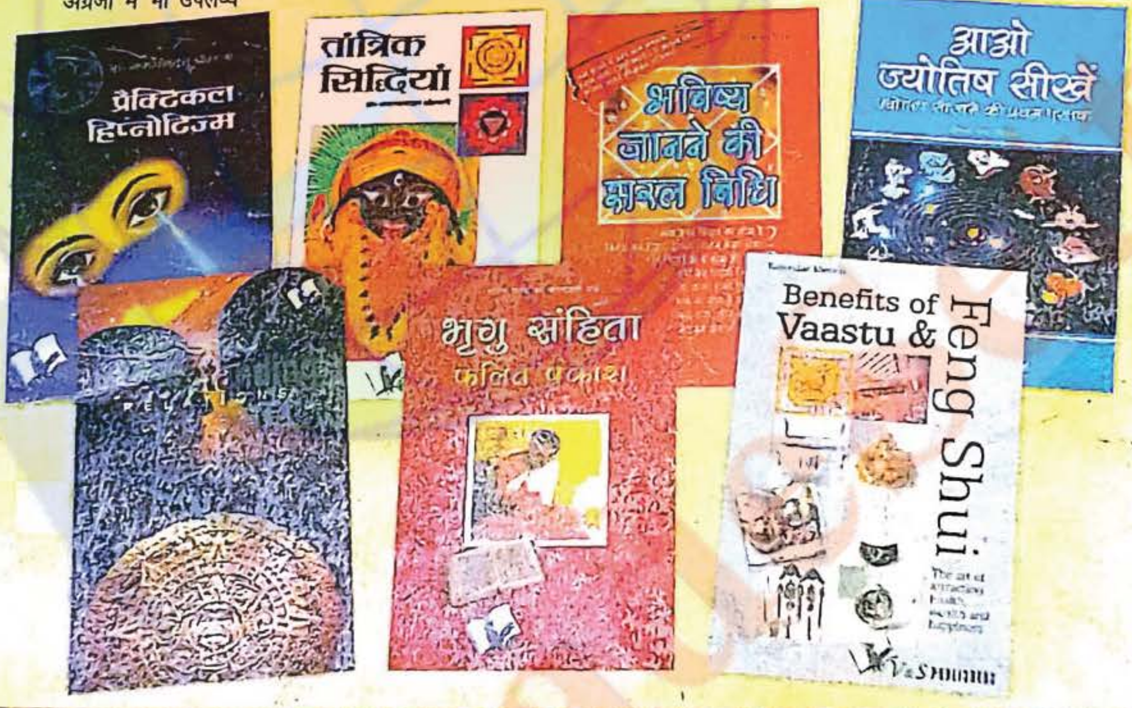



Body, Mind & Spirit/Mysticism

ISBN10:93-814480-2-7
ISBN978-93-814480-2-1

9 789381 448021

₹ 120/-

12903 P

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

E-mail: info@vspublishers.com
Website: www.vspublishers.com

वितरक :
पुस्तक महल®

WWW.GRADESETTER.COM